॥ श्री ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

११३

श्रीमन्माधवाचार्यकृतः

सर्वदर्शनसंग्रहः

सपरिशिष्ट 'प्रकाश'-हिन्दीभाष्योपेतः

भाष्यकार—

डॉ० उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि'

आचार्य, एम० ए०, डी० लिट्० (पटना)

रीडर, संस्कृत-विभाग, पटना विश्वविद्यालय (पटना)

चौखम्बा विद्याभवन

वा रा ण सी २२१००१

THE

VIDYABHAWAN SANSKRIT GRANTHAMALA

113

THE

SARVA-DARSANA-SAMGRAHA

OF

MĀDHAVĀCARYA

Edited with an exhaustive Hindi Commentary, Copious Appendixes and Anglo-Hindi Introductions

By

Dr. Uma Shankar Sharma 'Rishi'

Acharya, M A., D. Litt. (*Patna*)

Reader, Deptt of Sanskrit, Patna University, Patna

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

VARANASI

विषय-सूची

१ Foreword : Dr. S. Bhattacharya १–२
२ आशीर्वचन : स्वामी महेश्वरानन्द सरस्वती ३–६
३ Introduction १–२३
४ पूर्वपीठिका २५–४४

(१) चार्वाक-दर्शन ३–२२

१ चार्वाक और लोकायतिक—नामकरण ३
२ तत्त्व-मीमांसा ४
३ सुख की प्राप्ति – दुःख और सुख का मिश्रण ५
४ यज्ञों और वेदों की निस्सारता ६
५ ईश्वर-मोक्ष-आत्मा ८
६ मत-संग्रह ९
७ अनुमान-प्रमाण का खण्डन ९
८ प्रत्यक्ष द्वारा व्याप्तिज्ञान नहीं हो सकता ११
९ अनुमान और शब्द से व्याप्तिज्ञान नहीं हो सकता १२
१० उपमानादि से भी व्याप्ति सम्भव नहीं १४
११ व्याप्तिज्ञान का दूसरा उपाय भी नहीं है १५
१२ व्याप्तिज्ञान और उपाधिज्ञान में अन्योन्याश्रयदोष १८
१३ लौकिक-व्यवहार और वस्तुएँ १९
१४ चार्वाक-मत-सार २०

(२) बौद्ध-दर्शन २३–८९

१ चार्वाक-मत का खण्डन—व्याप्ति की सुगमता २३
२ अन्वय-व्यतिरेक से व्याप्तिज्ञान संभव नहीं २४
३ तदुत्पत्ति से अविनाभाव का ज्ञान – पंचकारणी २६
४ तादात्म्य से अविनाभाव का ज्ञान २७
५ अनुमान का खण्डन करने वालों को उत्तर २८
६ बौद्धदर्शन के चार भेद—भावनाचतुष्टय ३१
७ क्षणिकत्व की भावना—अर्थक्रियाकारित्व ३३
८ अक्षणिक पदार्थ का 'क्रम' से अर्थक्रियाकारी नहीं होना ३६
९ सहकारियों की सहायता पाकर भी अक्षणिक अर्थक्रियाकारी नहीं हो सकता ३७

१० अतिशय का दूसरा अतिशय उत्पन्न करने में दोष ४०
११ दूसरा अतिशय उत्पन्न करने में अनवस्था सं० १ ४१
क. अनवस्था सं० २ ४२
ख. अनवस्था सं० ३ ४३
१२ स्थायी भाव से अतिशय के अभिन्न होने पर आपत्ति ४३
१३ अक्षणिक पदार्थ का 'अक्रम' से अर्थक्रियाकारी नहीं होना ४४
क. असामर्थ्य-साधक प्रसंग और उसका विपर्यय ४५
ख. सामर्थ्य-साधक प्रसंग और तद्विपर्यय ४७
१४ निष्कर्ष—क्षणिकवाद की स्थापना ४८
१५ सामान्य का खण्डन ४९
१६ दुःख और स्वलक्षण की भावनायें ५२
१७ शून्य की भावना—माध्यमिक-सम्प्रदाय ५४
१८ योगाचार-मत—विज्ञानवाद ५८
१९ बाह्य पदार्थ का खण्डन ५९
२० बुद्धि का स्वयं प्रकाशित होना ६१
२१ सौत्रान्तिक-मत—बाह्यार्थानुमेयवाद ६४
२२ बाह्यार्थ की सत्ता—निष्कर्ष ६७
२३ बाह्यार्थ प्रत्यक्ष नहीं, अनुमेय है ६८
२४ आलय-विज्ञान और प्रवृत्ति-विज्ञान ६९
२५ विज्ञानवादियों के मत पर दोषारोपण ७२
२६ ज्ञान के चार कारण ७३
२७ चित्त और उसके विकार—पाँच स्कन्ध ७५
२८ चार आर्य सत्य—दुःख, समुदाय, निरोध, मार्ग ७६
क. हेतूपनिबन्धन समुदाय का स्वरूप ७८
२९ सौत्रान्तिक-मत का उपसंहार ८०
३० वैभाषिक-मत—बाह्यार्थप्रत्यक्षत्वाद ८१
३१ निर्विकल्पक प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है ८५
३२ तत्त्व की अभिन्नता—मार्गों में भेद ८६
३३ द्वादश आयतनों की पूजा ८७
३४ बौद्ध मत का संग्रह ८७

(३) आर्हत-दर्शन (जैन-दर्शन) ९०–१५४

१ क्षणिक-भावना का खण्डन ९०
२ क्षणिक-पक्ष में बौद्धों की युक्ति ९१

३ जैनों द्वारा उपर्युक्त मत का खंडन ९३
४ क्षणिकवाद के खंडन की दूसरी विधि ९४
५ क्षणिकत्व-पक्ष में ग्राह्य-ग्राहक-भाव न होना ९९
६ ज्ञान का साकार होना और दोष १००
७ अर्हत्-मत की सुगमता, अर्हत् का स्वरूप १०३
८ अर्हत् के विषय में विरोधियों की शंका १०४
९ अर्हत् पर मीमांसकों की शंका का समाधान १०७
१० नैयायिकों की शंका और उसका उत्तर ११०
११ सावयवत्व के पांच विकल्प और उनका खण्डन १११
१२ ईश्वर के कर्त्ता बनने पर आपत्ति ११५
१३ सर्वज्ञ की सिद्धि ११७
१४ त्रिरत्नों का वर्णन—सम्यक् दर्शन ११७
१५ सम्यक् ज्ञान और उसके पाँच रूप ११९
१६ सम्यक् चारित्र और पाँच महाव्रत १२१
१७ प्रत्येक व्रत की पाँच-पाँच भावनायें १२३
१८ जैन तत्त्व-मीमांसा—दो तत्त्व १२४
१९ पाँच तत्त्व—दूसरा मत १२९
२० काल भी एक द्रव्य है १३३
२१ सात तत्त्व—तीसरा मत १३५
क. बन्ध का निरूपण १३७
२२ बन्धन के कारण १३८
क. बन्धन के भेद १३९
२३ संवर और निर्जरा नामक तत्त्व १४२
क. निर्जरा १४३
२४ मोक्ष का विचार १४४
२५ जैन न्यायशास्त्र—सप्तभंगीनय १४६
२६ जैनमत-संग्रह १५३

(४) रामानुज-दर्शन (विशिष्टाद्वैत-वेदान्त) १५५–२१०

१ अनेकान्तवाद का खण्डन १५५
२ सप्तभंगीनय की निस्सारता १५८
३ जीव के परिमाण का खण्डन १५८
४ रामानुज-दर्शन के तीन पदार्थ १६१
५ अद्वैत-वेदान्त का इस विषय में पूर्वपक्ष १६१
क. रामानुज का उत्तर-पक्ष, अद्वैतियों की अविद्याका पूर्व पक्ष १६२

६ रामानुज द्वारा इसका खण्डन १६६
७ अज्ञान को भावरूप मानने में अनुमान और उसका खण्डन १६८
क. उपर्युक्त अनुमान का प्रत्यनुमान १६९
८ भावरूप अज्ञान मानने में श्रुति प्रमाण नहीं है १७१
९ अज्ञान की सिद्धि अर्थापत्ति से भी नहीं—'तत्त्वमसि' का अर्थ १७३
१० 'तत्त्वमसि' में लक्षणा—अद्वैत-पक्ष १७४
११ रामानुज का उत्तर-पक्ष १७५
१२ सभी शब्द परमात्मा के वाचक हैं १७७
१३ निर्विशेष ब्रह्म की अप्रामाणिकता १८१
१४ प्रपंच की सत्यता १८२
१५ निर्गुणवाद और नानात्वनिषेध की सिद्धि १८५
१६ रामानुज-मत की तत्त्वमीमांसा १८६
क. चित्, अचित् और ईश्वर के स्वभाव १८६
ख. जीव का वर्णन १८९
ग. अचित् का निरूपण १९१
१७ ईश्वर का निरूपण—उनकी पाँच मूर्तियाँ १९१
१८ उपासना के पाँच प्रकार और मुक्ति १९४
१९ ब्रह्मसूत्र की व्याख्या—प्रथम सूत्र १९५
क. कर्म के साथ ब्रह्म का ज्ञान मोक्ष का साधन है १९७
२० ब्रह्म-जिज्ञासा का अर्थ २००
२१ भक्ति का निरूपण २०४
२२ द्वितीय सूत्र—ब्रह्म का लक्षण २०६
२३ तृतीय सूत्र—ब्रह्म के विषय में प्रमाण २०७
२४ चतुर्थ सूत्र—शास्त्रों का समन्वय २०९
(५) पूर्णप्रज्ञ-दर्शन (द्वैत-वेदान्त) २११-२५३
१ द्वैतवाद की रामानुजमत से समता और विषमता २११
२ द्वैतवाद के तत्त्व—भेद की सिद्धि २१२
३ प्रत्यक्ष से भेद-सिद्धि—शंका २१३
क. प्रत्यक्ष से भेद-सिद्धि—समाधान २१५
४ धर्मभेदवादी का समर्थन—भेद की सिद्धि २२०
५ अनुमान-प्रमाण से भेद की सिद्धि २२३
६ ईश्वर की सेवा के नियम २२५
क. नामकरण और भजन २२७

७ श्रुति-प्रमाण से भेद की सिद्धि २२७
८ माया का अर्थ—द्वैत का प्रतिपादन २२८
९ ईश्वर की सर्वोत्कृष्टता के अन्य प्रमाण २३१
१० मोक्ष ईश्वर के प्रसाद से ही मिलता है २३२
११ 'तत्त्वमसि' का अर्थ २३३
क. तत्त्वमसि का दूसरा अर्थ २३४
ख. उक्त नव दृष्टान्तों से भेद-सिद्धि २३७
१२ एक के ज्ञान से सभी वस्तुओं का ज्ञान—इसका अर्थ २३८
१३ मिथ्या का खण्डन २४२
१४ ब्रह्मसूत्र के प्रथम सूत्र का अर्थ २४६
१५ ब्रह्म का लक्षण २४८
१६ ब्रह्म के विषय में प्रमाण २४८
१७ शास्त्रों का समन्वय २५०
१८ पूर्णप्रज्ञ-दर्शन का उपसंहार २५१
(६) नकुलीश-पाशुपत-दर्शन २५४-२७३
१ वैष्णव-दर्शनों में दोष २५४
२ पाशुपत-सूत्र की व्याख्या—गुरु का स्वरूप २५६
क. सूत्र के अन्य शब्द—अतः, पति आदि २५९
३ दुःखान्त का निरूपण २६०
४ कार्य का निरूपण २६२
५ कारण और योग का निरूपण २६४
६ विधि का निरूपण २६५
७ समासादि पदार्थ और अन्य शास्त्रों से तुलना २६८
८ निरपेक्ष ईश्वर की कारणता २६९
९ ईश्वर के ज्ञान से मोक्ष-प्राप्ति २७२
(७) शैव-दर्शन २७४-२९७
१ शैवागम-सिद्धान्त के तीन पदार्थ २७४
२ 'पति' का निरूपण २७७
क. ईश्वर को कर्त्ता मानने में आपत्ति और समाधान २७८
३ ईश्वर का शरीर-धारण २८१
४ 'पशु' पदार्थ का निरूपण—अन्य मतों का खण्डन २८५
५ जीव के तीन भेद २८७
क. विज्ञानाकल जीव के दो भेद २८८

ख. प्रलयाकल जीव के दो भेद २८९
ग. 'सकल' जीव के भेद २९२
६ 'पाश' पदार्थ का निरूपण २९४
७ उपसंहार २९६

(८) प्रत्यभिज्ञा-दर्शन (काश्मीरी शैव-दर्शन) २९८-३२१
१ प्रत्यभिज्ञा-दर्शन का स्वरूप २९८
२ प्रत्यभिज्ञा-दर्शन का साहित्य ३००
३ प्रथम सूत्र की व्याख्या ३०२
क. 'अपि' और 'उप' शब्दों के अर्थ ३०५
४ प्रत्यभिज्ञा के प्रदर्शन की आवश्यकता ३०८
५ ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति ३१०
६ वस्तुओं का प्रकाशन—आभासवाद ३११
७ ईश्वर की इच्छा से संसारोत्पत्ति ३१३
८ उपादान कारण और पदार्थों की उत्पत्ति ३१५
९ विभिन्न प्रश्न—जीव और संसार का सम्बन्ध ३१७
क. प्रमेय को लेकर बद्ध और मुक्त में भेद ३१७
१० प्रत्यभिज्ञा की आवश्यकता—अर्थक्रिया में भेद ३१८
११ उपसंहार ३२१

(९) रसेश्वर-दर्शन (आयुर्वेद-दर्शन) ३२२-३३५
१ रस से जीवन्मुक्ति—पारद और उसका स्वरूप ३२२
२ जीवन्मुक्ति की आवश्यकता ३२३
३ हर-गौरी की सृष्टि—पारद, अभ्रक ३२४
४ रस की सामर्थ्य से दिव्य-देह की प्राप्ति ३२६
५ दो प्रकार के कर्म-योग ३२६
६ पारद के तीन स्वरूप—मूर्छित, मृत और बद्ध ३२७
७ रस के अष्टादश संस्कार ३२८
८ देहवेध और उसकी आवश्यकता ३२९
९ जीवितावस्था में मुक्ति—देहवेध के विषय में शंका ३३०
१० जीवितावस्था में मुक्ति—एक वाद ३३०
११ शरीर की नित्यता—इसके प्रमाण ३३२
१२ पारद-रस के सेवन से जरामरण से मुक्ति ३३३
१३ पारद-लिंग की महिमा ३३३

१४ पुरुषार्थ और ब्रह्म-पद ३३४
१५ रस और परब्रह्म में समता—रसस्तुति ३३५
(१०) औलूक्य-दर्शन (वैशेषिक-दर्शन) ३३६–३८४
१ दुःखान्त के लिये परमेश्वर का साक्षात्कार ३३६
२ वैशेषिक-सूत्र की विषय-वस्तु ३४०
३ शास्त्र की प्रवृत्ति—उद्देश, लक्षण, परीक्षा ३४२
४ पदार्थों की संख्या—छह या सात ३४५
५ छह पदार्थों के लक्षण—द्रव्यत्व और गुणत्व ३४७
क. कर्मत्व, सामान्य, विशेष और समवाय ३५०
६ द्रव्य के भेद और उनके लक्षण ३५२
७ गुण के भेद और उनके लक्षण ३५७
८ कर्म आदि के भेद ३५८
९ द्वित्व आदि की उत्पत्ति का विवेचन ३६०
क. द्वित्व की उत्पत्ति का क्रम ३६१
ख. द्वित्व की निवृत्ति का क्रम ३६३
ग. अपेक्षाबुद्धि का लक्षण ३६६
१० पाकज पदार्थ की उत्पत्ति ३६७
११ विभागज विभाग का विवेचन ३७०
क. विभागज विभाग का दूसरा भेद ३७५
१२ अन्धकार का विवेचन ३७६
१३ अन्धकार के विषय में वैशेषिक-मत ३७९
१४ अभाव का विवेचन ३८१
(११) अक्षपाद-दर्शन (न्याय-दर्शन) ३८५–४३८
१ न्यायशास्त्र की रूपरेखा ३८५
२ प्रमाण का विचार ३८९
३ प्रमेय-पदार्थ का विचार ३९४
४ संशय, प्रयोजन और दृष्टान्त ३९७
क. सिद्धान्त और अवयव ३९८
५ तर्क का स्वरूप और भेद ४००
क. निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा ४०२
ख. हेत्वाभास और छल ४०३
६ जाति और उसके चौबीस भेद ४०८
क. निग्रहस्थान और उसके बाईस भेद ४१४

७ न्यायशास्त्र का नामकरण ४१७
८ अपवर्ग के साधन—न्याय का द्वितीय सूत्र ४१९
९ मोक्ष का स्वरूप—माध्यमिक मत ४२२
क. मोक्ष के विषय में विज्ञानवादियों का मत ४२३
१० जैनों के मत से मोक्ष का विचार ४२४
११ चार्वाक और सांख्य-मत में मोक्ष ४२५
क. मीमांसा-मत से मुक्ति-विचार ४२६
१२ नैयायिक-मत से मुक्ति-विचार ४२८
१३ ईश्वर की सत्ता के लिए प्रमाण—पूर्वपक्ष ४२९
क. नैयायिकों का उत्तर—ईश्वरसिद्धि ४३०
ख. कर्त्ता का लक्षण तथा ईश्वर का कर्तृत्व ४३३
१४ ईश्वर के द्वारा संसार-निर्माण—पूर्वपक्ष ४३५
१५ ईश्वर के द्वारा संसार-निर्माण—सिद्धान्त ४३६

(१२) जैमिनि-दर्शन (मीमांसा-दर्शन) **४३९–४८८**

१ मीमांसा-सूत्र की विषय-वस्तु ४३९
२ प्रथम सूत्र तथा अधिकरण का निरूपण ४४६
३ भाट्टमत से अधिकरण का निरूपण ४४७
क. पूर्वपक्ष—शास्त्रारम्भ ठीक नहीं ४४७
४ सिद्धान्तपक्ष—शास्त्रारम्भ करना सर्वथा उचित है ४५२
क. अध्ययन-विधि का लक्ष्य अर्थबोध ही है ४५४
ख. मीमांसा के विषय में अन्य शंका और उत्तर ४५५
५ सिद्धान्तपक्ष का उपसंहार और संगति का निरूपण ४५६
६ प्रभाकर के मत से उक्त अधिकरण का निरूपण ४५७
क. प्रभाकर-मत से पूर्वपक्ष ४६०
ख. प्रभाकर-मत से सिद्धान्तपक्ष ४६१
७ वेदों को पौरुषेय मानने वाले पूर्वपक्ष का निरूपण ४६३
क. पौरुषेयसिद्धि का दूसरा रूप ४६६
८ वेद अपौरुषेय हैं—सिद्धान्त-पक्ष ४६७
क. पौरुषेयत्व का दूसरे प्रकार से खण्डन ४६८
९ शब्दानित्यत्व का खण्डन ४७०
१० वेद की प्रामाणिकता—निष्कर्ष ४७४
११ प्रामाण्यवाद का निरूपण ४७६
क. स्वतःप्रामाण्य का अर्थ—लम्बी आशंका ४७८
१२ स्वतःप्रामाण्य की सिद्धि—शंका-समाधान ४८३
क. ज्ञप्ति-विषयक स्वतःप्रामाण्य की सिद्धि ४८५

१३ प्रामाण्य का उपयोग प्रवृत्ति में नहीं होता—उदयन ४८५
क. इसका खण्डन ४८६
१४ मीमांसा-दर्शन का उपसंहार ४८७
(१३) पाणिनि-दर्शन (व्याकरण-दर्शन) ४८९–५२६
१ प्रकृति-प्रत्यय का विभाजन ४८९
२ 'अथ शब्दानुशासनम्' का अर्थ ४९०
क. 'शब्दानुशासन' पर विचार-विमर्श ४९१
३ शब्दानुशासन से प्रयोजन की सिद्धि ४९५
४ व्याकरणशास्त्र की विधि—प्रतिपदपाठ नहीं ४९७
५ व्याकरण के अन्य प्रयोजन ५००
क. व्याकरण से अभ्युदय की प्राप्ति ५०२
६ शब्द ही ब्रह्म है ५०४
क. पद-भेद की संख्या ५०५
७ स्फोट—नैयायिकों की शंका और उसका समाधान ५०७
क. स्फोट पर अन्य शंका—मीमांसक ५०९
८ मीमांसकों की शंका का उत्तर—स्फोट-सिद्धि ५१२
क. स्फोट पर अन्य आपत्तियाँ और समाधान ५१३
९ सत्ता ही शब्दों का अर्थ है—पूर्वपक्ष और सिद्धान्त-पक्ष ५१५
१० द्रव्य को पदार्थ माननेवालों को विचार ५१८
११ जाति और व्यक्ति को पदार्थ मानने वालों का विचार ५२०
१२ पाणिनि के मत से पदार्थ—जाति-व्यक्ति दोनों हैं ५२२
१३ अद्वैत ब्रह्मतत्त्व की सिद्धि ५२४
१४ व्याकरण से मोक्षप्राप्ति ५२५
(१४) सांख्य-दर्शन ५२७–५५३
१ सांख्य-दर्शन के तत्त्व ५२७
२ प्रकृति का अर्थ ५२८
३ प्रकृति और विकृति से युक्त तत्त्व ५३०
४ केवल विकृति के रूप में वर्तमान तत्त्व ५३५
५ प्रकृति-विकृति से रहित पुरुष-तत्त्व ५३६
६ सांख्य-प्रमाण-मीमांसा ५३७
७ कार्य-कारण-सम्बन्ध पर विभिन्न मत ५३९
क. कार्य-कारण-भाव के मतों का खंडन ५४१
८ सत्कार्यवाद की सिद्धि ५४२
क विवर्तवाद का खंडन ५४६

९ प्रधान या प्रकृति की सिद्धि ५४६
१० प्रधान की निरपेक्षता ५४९
क. परमेश्वर प्रवर्तक नहीं हैं ५५०
११ प्रकृति-पुरुष का सम्बन्ध ५५१
१२ प्रकृति की निवृत्ति—प्रलय ५५२
(१५) पातञ्जल-दर्शन (योग-दर्शन) ५५४–६३०
१ योगसूत्र की विषय-वस्तु ५५४
२ मोक्ष के विषय में शंका और उसका समाधान ५५८
३ प्रथम सूत्र की व्याख्या—'अथ' शब्द का अर्थ ५६१
क. 'अथ' शब्द मंगल का द्योतक भी नहीं ५६६
४ 'अथ' का अर्थ आरम्भ या अधिकार ५६९
५ योग के चार अनुबन्ध ५७१
६ योग और शास्त्र में सम्बन्ध ५७३
७ योग का लक्षण और समाधि ५७४
क. योग का अर्थ समाधि—आपत्ति ५७६
ख. योग का व्यावहारिक अर्थ—चित्तवृत्तिनिरोध ५७८
८ चित्त और विषयों का सम्बन्ध ५८१
क. परिणाम के तीन भेद ५८३
९ योग का अर्थ वृत्तिनिरोध लेने पर आपत्ति ५८४
क. समाधान ५८६
१० समाधि का निरूपण—इसके भेद ५८७
११ पाँच प्रकार के क्लेश—अविद्या पर आपत्ति ५८९
क. आपत्ति का समाधान ५९२
१२ अस्मिता, राग और द्वेष ५९५
१३ 'अनुशयी' शब्द की सिद्धि में व्याकरण का योग ५९६
१४ अभिनिवेश का निरूपण ५९८
१५ कर्म, विपाक और आशय ५९९
१६ वृत्तिनिरोध के उपाय—अभ्यास और वैराग्य ६००
१७ समाधि-प्राप्ति के लिये क्रिया-योग ६०१
१८ मंत्र और उनका विवेचन ६०३
क. मंत्रों के दश संस्कार ६०४
१९ ईश्वर प्रणिधान और क्रियायोग का उपसंहार ६०६
२० क्रिया ही योग है—शुद्धा सारोपा लक्षणा ६०७
क. प्रयोजनमूलक लक्षणा ६११

२१ योग के आठ अंग—यम और नियम ६१३
क. आसन और प्राणायाम ६१४
२२ वायुतत्त्व का निरूपण ६१६
२३ प्रत्याहार का निरूपण ६२१
क. धारणा और ध्यान ६२३
२४ योग से प्राप्त होने वाली सिद्धियाँ ६२४
क. मधुमती-सिद्धि ६२४
ख. अन्य सिद्धियाँ—मधुप्रतीका, विशोका, संस्कारशेषा ६२५
२५ कैवल्य की प्राप्ति—प्रकृति और पुरुष को ६२८
क. योगशास्त्र के चार पक्ष ६२९
(१६) शांकर-दर्शन (अद्वैतवेदान्त) ६३१-७६०
१ परिणामवाद-खण्डन—प्रकृति की सिद्धि अनुमान से असंभव ६३१
क. प्रकृति के लिये श्रुति-प्रमाण भी नहीं है ६३३
ख. सांख्य-दर्शन के दृष्टान्त का खण्डन ६३४
२ वेदान्तसूत्र की विषय-वस्तु ६४१
३ ब्रह्म की जिज्ञासा—प्रथम अधिकरण ६४५
४ आत्मा की जिज्ञासा—सन्देह की असंभावना ६४६
क. आत्मा की जिज्ञासा असंभव—प्रयोजन का अभाव ६५०
५ ब्रह्म-जिज्ञासा का आरम्भ सम्भव—उत्तरपक्ष ६५६
क. उपक्रम आदि लिंगों के उदाहरण—आत्मा की सिद्धि ६५८
६ आत्मा का अध्यास—वैशेषिक-मत की परीक्षा ६५९
क. आत्मा के अध्यास की पुनः सिद्धि—भेद का खण्डन ६६४
ख. जैनमत में स्वीकृत जीव पर विचार ६६६
७ विज्ञानवादी बौद्धों का खण्डन—विज्ञान आत्मा ६६८
८ आत्मा के विषय में सन्देह ६७१
९ ब्रह्म की सिद्धि के लिये आगम प्रमाण ६७३
क. सिद्ध अर्थ का बोधक होने से वेद अप्रमाण—पूर्वपक्ष ६७५
ख. सिद्ध अर्थ में शब्दों की व्युत्पत्ति—उत्तरपक्ष ६७८
१० अध्यास का निरूपण—प्रपंच का विवर्तरूप होना ६८२
क. अध्यास के भेद—दो प्रकार से ६८३
११ अध्यास का मीमांसकों के द्वारा खण्डन—लम्बा पूर्वपक्ष ६८५
क. मिथ्याज्ञान के लिये कारण-सामग्री का अभाव ६८७
ख. असत् अर्थ का ज्ञान नहीं होता ६८९

	ग. ग्रहण और स्मरण का विश्लेषण	६९०
	घ. ग्रहण और स्मरण में अभेद या सारूप्य	६९२
	ङ. 'पीतः शङ्खः' के व्यवहार का समर्थन	६९६
१२	'नेदं रजतम्' की सिद्धि—मीमांसक मत	६९८
	क. प्रभाकर-मत से अभाव का खण्डन	७००
१३	मिथ्याज्ञान की सत्ता है—शंकर का उत्तरपक्ष	७०३
	क. रजत का सीपी पर आरोप	७०७
१४	आरोप के विषय में शंका-समाधान	७१०
	क. मीमांसकों के तर्कों का उत्तर	७११
१५	माध्यमिक बौद्धों का खण्डन—भ्रमविचार	७१५
	क. विज्ञानवादियों का खण्डन—भ्रमविचार	७१८
	ख. नैयायिकों की अन्यथाख्याति का खण्डन	७२०
१६	'इदं रजतम्' में ज्ञान की एकता—शङ्का-समाधान	७२२
१७	त्रिविधसत्ता तथा अनिर्वचनीय-ख्याति	७२५
१८	माया और अविद्या की समानता	७२८
	क. अविद्या की सत्ता के लिए प्रमाण	७३०
	ख. 'अहमज्ञः' का प्रत्यक्ष अनुभव और नैयायिक-खण्डन	७३३
१९	दूसरी विधि से 'अहमज्ञः' के द्वारा अविद्या की सिद्धि	७३७
२०	अनुमान से अविद्या की सिद्धि	७३९
२१	शब्द-प्रमाण से अविद्या की सिद्धि	७४४
२२	शाक्त-सम्प्रदाय में माया-शक्ति	७४५
२३	संसार अविद्याकल्पित है—शंका-समाधान	७४६
२४	प्रपंच की सत्यता का खण्डन—सत्य की निवृत्ति नहीं	७५३
२५	आत्मज्ञान से अविद्या-नाश—राजपुत्र का दृष्टान्त	७५६
२६	प्रथम सूत्र का उपसंहार और अनुबन्ध	७५८
	क. चतुस्सूत्री के अन्य सूत्र—स्वरूप और तटस्थ लक्षण	७५९
परिशिष्ट—१	प्रमुख दर्शन-ग्रन्थों की सूची	७६१
परिशिष्ट—२	प्रमुख दार्शनिक और उनकी कृतियाँ	८०२
परिशिष्ट—३	मूलग्रन्थ में निर्दिष्ट ग्रन्थ और ग्रन्थकार	८२५
परिशिष्ट—४	मूलग्रन्थ के उद्धरण	८३०
परिशिष्ट—५	शब्दानुक्रमणी	८५३

—: ० :—